Reg. No. 694/2009-10 Impact Factor : 5.029 ISSN : 2250-1193

Anukriti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 12, No. 2 Year-12 February, 2022

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief

Prof. Vijay Bahadur Singh

Head, Hindi Department
Dean, Faculty of Arts
Banaras Hindu University
Varanasi

Editor

Dr. Ramsudhar Singh

Ex Head, Department of Hindi
Udai Pratap Autonomous College
Varanasi

Published by

SRIJAN SAMITI PUBLICATION

VARANASI (U.P.), INDIA

Mob. 9415388337, E-mail : anukriti193@rediffmail.com, Website : anukritijournals.com

☆	आचार्य बृहस्पति द्वारा रचित ग्रंथ "नाट्यशास्त्र का 28वाँ अध्याय–स्वराध्याय" (संस्कृत भाषा तथा हिन्दी टीका सहित) : एक अध्ययन **डॉ0 रवि पाल**	77-79
☆	गाँधी का मानवतावादी चिंतन **अभिषेक सिंह**	80-82
☆	मनोवैज्ञानिकसन्दर्भे आश्वलायनगृह्यसूत्रे वर्णितानां संस्काराणां प्रयोजनम् **वेदप्रकाश गौतम**	83-86
☆	खिलाड़ी छात्र व खिलाड़ी छात्राओं के परोपकारी व्यवहार एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन **राम बचन यादव एवं** प्रो0 श्रवण कुमार	87-90
☆	An Analysis of Dividend Policy and its Influence on Price-Earnings Ratio: A Case study of ONGC **Pradeep Kumar Sonker**	91-96
☆	उत्तराखण्डलोकदेवगाथासु "घात" इति दैवीयन्यायव्यवस्थायाः शास्त्रसम्मतविवेचनम् **कुलदीप चन्द्र**	97-99
☆	अकबरपुर ब्लॉक (अम्बेडकर नगर) में कृषि विकास का आर्थिक परिवर्तन पर प्रभाव का आंकलन **सौरभ सिंह एवं डॉ० श्याम बहादुर सिंह**	100-104
☆	उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का क्षेत्र व लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन **डॉ0 पवन कुमार सिंह**	105-112
☆	Sri Aurobindo's Decolonising Agenda in Indian Context **Manish Kumar Gupta**	113-116
☆	प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा : विकास के परिप्रेक्ष्य में **डॉ0 अनिता वर्मा**	117-122
☆	निर्मल वर्मा के उपन्यासों में चित्रित पाश्चात्य सभ्यता का सामाजिक परिवेश **सत्य प्रकाश शुक्ल एवं प्रो0 धर्मेंद्र कुमार शुक्ल**	123-125
☆	Effect to Chromium (III & VI) Exposure and Behavioural Changes in Anabas testudineus **Jawaid Akhter & Dr. Anil Kumar Sinha**	126-132
☆	स्वतंत्रता संघर्ष में क्रांतिकारियों के आंदोलन का स्वरूप **डॉ० श्रीनाथ सिंह**	133-134
☆	तंत्र का अभिप्राय तथा तंत्र साहित्य का तिथि निर्धारण **दिनेश पाल**	135-138
☆	कृषि विपणन व्यवस्था के दोष व इससे सम्बन्धित समस्यायें : उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में **आदित्य कुमार झा**	139-141
☆	Slums: Government Strategies for Improvement **Dr. Roli Prakash**	142-146

Reg. No. 694/2009-10
Anukriti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 12, No. 2, February 2022
Impact Factor : 5.029
ISSN : 2250-1193

तंत्र का अभिप्राय तथा तंत्र साहित्य का तिथि निर्धारण

दिनेश पाल
सहायक आचार्य, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हि.प्र.

संक्षेप

तंत्र दर्शन अति प्राचीन है जिसके चिह्न में हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की प्राचीनतम सभ्यताओं में भी देखने को मिलते हैं किंतु तंत्र का कोई क्रमिक प्रमाणित हमें प्राप्त नहीं होता है और इसमें कमी प्रमाण इकट्ठा करना दुर्गम भी है क्योंकि यह एक अत्यंत प्राचीन आध्यात्मिक चिंतन है जिसने समाज के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया इस शोध प्रपत्र के अंतर्गत तंत्र के अभिप्राय तथा उसके तिथि निर्धारण पर प्रमाणों के आधार पर तंत्र की प्राचीनता को सिद्ध किया गया है

महत्त्वपूर्ण शब्द : अभिनवगुप्त, सौदर्य, दर्शन।

तंत्र साहित्य-

समय जिसमें मनुष्य और संसार विद्यमान रहते हैं| उस अवधि को महा युग कहा जाता है इस महा युवक को चार युगों में विभाजित किया गया सतयुग त्रेता युग द्वापर युग तथा कलयुग कल पिया ब्रह्मा के 1 दिन का एक अंश मात्र है, क्योंकि ४३२0000000 मानव वर्षो के बराबर होता है कल्प को चौदह मन्वन्तरो में विभक्त किया गया है| जिन्हें ७१ महा युग में विभक्त किया जाता है और एक महायुग चार युगों से मिलकर बना होता है| प्रत्येक अवधि से संबंधित शास्त्र है, जो अवधि में रहने वाले मानव के चरित्र और अवश्यकतो से मेल खाते है| हिंदू शास्त्रों का वर्गीकरण कुछ इस प्रकार है|

१- श्रुति इन में सामान्यता चार वेदों और प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है|
२- स्मृति इसमें मनु के धर्म शास्त्र को सम्मिलित किया गया|
३- पुराण -ब्रह्मा वैवर्त पुराण के अनुसार चार लाख पुराण है किंतु इनमें से 18 मुख्य है|

प्रत्येक काल का एक उचित शास्त्र वेद, सभी शास्त्रों का मूल है| अन्य सभी इसी पर आधारित है इस आधार पर वेदों को मूल शास्त्र भी कहा जाता है| तंत्र को पंचम वेद की संज्ञा दी गई है|[1]

मध्ययुगीन भारत के धार्मिक अनुष्ठान तथा प्रथाएँ तंत्र विचारों द्वारा प्रभावित है। साथ ही तंत्र कर्मकांडों तथा साहित्य ने पुराणो को भी प्रभावित किया है। बोध, जैन तथा हिंदू पंथ के अंतर्गत अत्यधिक संख्या में तंत्र साहित्य मिलता है चाहे वह प्रकाशित हो यह कंठित। बी भट्टाचार्य, एसपी बाग्चि, सर जॉन वुडरोफ द्वारा इन साहित्यिक कार्यों का गहन अध्ययन संपादन एवं प्रकाशन किया गया है इन सभी ने तंत्र के दार्शनिक तथा आध्यात्मिक पहलुओं एवं तंत्र के कर्मकांड अभ्यास के दृष्टिकोण में अंतर को भी माना है साधारणतः तंत्रों को मुद्रा, मंत्र,यंत्र, मंडल, पंचमकार आदि विभिन्न विधियों के द्वारा काली माता की पूजा करने से जोड़ा जाता है। मध्य युग में तंत्र साहित्य से प्रचुर मात्रा में कर्मकांड विधाएं प्राप्त होती है और पूरे हिंदू कर्मकांड प्रणाली इन विधियों के इर्द गिर्द घूमती है लेकिन फिर भी तंत्रों की उत्पत्ति के बारे में जानने का व्यवस्थित अभी प्रयत्न तक नहीं किया गया।

तन्त्र का अभिप्राय -

ग्रंथ और शास्त्रों के इतिहास में तंत्र का अपना ही अलग महत्व रहा है तंत्र इतना विस्तृत और गूढ़ ज्ञान है कि इसका अभ्यास अत्यंत गुप्त रखा गया| विद्वानों के अनुसार तंत्र शब्द जो कि एक संस्कृत का शब्द है, इसका उपयोग भारतीय परिवेश में सामान्यत: शास्त्र के लिए किया जाता है| हम देख सकते हैं की दर्शन के विभिन्न आयामों को तंत्र बुलाया गया| जैसे कपालीका तंत्र शक्ति तंत्र गौतम तंत्र आदि। सबसे लोकप्रिय अर्थ जिसमें तंत्र शब्द का उपयोग आजकल किया जाता है, वह साहित्य की ऐसी श्रेणी है, जिसमें जादू और विस्मयकारी पूजा का अध्ययन किया जाता है| कुछ विदवानों का मानना है कि, इस शब्द का उपयोग देवी पूजा से संबंधित क्रिया कर्म और रीति-रिवाजों में किया जाता है, किंतु यदि देखा जाए तो यह शब्द केवल देवीपूजा के लिए ही नहीं, अपितु देव पूजा में भी उपयोग किया जाता है| जैसा कि अध्ययन के द्वारा यह ज्ञात है कि शैव, वैष्णव, गणपति आदि में भी